

१३५६ वव्रा^{ति} विधि ॥

निबन्धनराय ॥ देवतामतासुः
तालचासु (मनन लाय सुप्ता नवि
भियाचक ॥ मल्लिकार्कान ॥ यवा
मत्तयं वग्न नगं गल विरुति ॥
धनस्तानमूलमनु नराचक ॥ दि
ष्टिविरयक ॥ चंदनादिसुष्मानविरय
सुखलूय आन गिराय ॥ धनधून
काव ॥ लासा लायाव ॥ ऊरुयाथासु
नय ॥ धमनु नयं लु कान चियाव
ऊरु सिद्धासनसुगय ॥ ॐ द्वा नि
येनम ॥ धनानिगतवन (म धन
मवित्रामराय ॥ गिलनिर्मा
लयालिनिर्मा गिलर्ल ॥ दवनि
कायालयय ॥ गितवनत्रुदु गि
सुलाय लुवान ॥ ॐ २४ द्वा आत्मन
यस्वाहा ॥ वादस ॥ ॐ २४ द्वा विद्य
लायस्वाहा ॥ गेरुस ॥ ॐ २४ द्वा वि
वतलायस्वाहा ॥ दूकुस ॥ धनानि
न (म धनराय ॥ ध ॥ ॐ द्वा विवि
लायद विवीनत्वा विद्यनयवद (म
स्वाहा ॥ रुमिस ॥ ॐ द्वा आत्मनस्वाय

[illegible]

अथ कृता मदेवदेवाय नमः ॥

लका ॥ ॐ क्रीं निरसनाम कनकाय स

हा ॥ नाम कृस ॥ ॐ क्रीं निरवाय रु ल

वासनी स्वाहा ॥ रु ल ॥ ॐ क्रीं कवचा

यज्ञन वासनाय स्वाहा ॥ अन्न ॥ ॐ

क्रीं नवतयाय चूडा कलाय स्वाहा ॥

आना ॥ ॐ क्रीं ४ अस्त्राय कलाय स्वाहा

य स्वाहा ॥ कलाय विजय ॥ ॐ क्रीं

रुदयाय वलवन्नाय स्वाहा ॥ भू

यत्रिकान् ॥ अथ दवया ॥ ॐ क्रीं

समानवर्त्तनाय स्वाहा ॥ अथ वि

जय ॥ ॐ क्रीं निरवाय दीक्षाय दाना

य स्वाहा ॥ अथ दवया मन्त्रकामे ॥

ॐ क्रीं कवचाय कन्या दानाय स्वाहा

भवति ॥ अथ कात्रादि नष्टायः

दि ॥ ॐ क्रीं नवतयाय अन्ननाय

स्वाहा ॥ त्वारा ॥ ॐ क्रीं ४ अस्त्राय

स्वाहा ॥ ॐ स्वस्ति नवतयाय दीक्षाय

दि ॥ ॥ अथ दवदेवदक्षिकेय ॥

नित्यं यत्री मन्त्रनासाधनयाय

थ ॥ ॐ नवतयाय विद्वद्भ्यो नमः

स्वदेवाय श्रीमन् नवतयाय ४

यथा दद्यात् ॥ ॥ अथ नातिर्वन्या

स विजय ॥ अथ दवया मन्त्रमन्त्र

नातिर्वन्या स विजय ॥ अथ यथा

[illegible]

कृष्ण हाम आ दा व ॥ वा ला हा क र्क
 ज्ञेय वा क र्क आ दा व द व ष क त र य
 मूल म न्न नं त्र कृ ति १०८ ॥ ॥
 ध ना थि त हा ल या ना पु वा न थि य
 वा ला हा क र्क आ दि ॥ ॥ ॥ ॥
 गारु व द व र्क द वा ना म थि वा क
 म। सा व च्छ द्वा क म दि ना म व र्क म
 च ला र व ॥ सा व च्छ द्वा च्छ सूर्य ॥
 म दि नी स क सा ग त्रा ४। वि स कृ कृ व
 ति व ति स व कृ सा ग ति गारु व ४॥
 ति गारु व ३ ॥ थि ल इ ल सा थ (थ) ॥
 च ल इ ल सा ॥ ॥ च ल ल ति गारु व
 ॥ ॥ ॥ ॥ द व या नि न ति ला क त र
 दू ति वि स व ल य ॥ ॥ पु वा न व ति व
 ॥ ॥ ध ना उ कृ म ल य स ॥ वा कृ ल य
 डा ॥ ॥ ॥ ॥ उ उ मा न स य थ क म न
 स उ कृ क र्क नि वा कृ ल य उ वा क र्क
 सूर्यो र्ग ज्ञेय न म यूर्य न म ॥ सूर्य
 क ल सा र ४०० द मा स र्क न म यूर्य न
 म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न न म यूर्य न म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 का र ४०० द मा स र्क न म यूर्य न म ॥
 सा व दा स सा व र्क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वताय ४०० सुनीनमयूखीनम ॥ ३६
 धैर्य ॥ रुमाधैर्य ॥ प्रणिधैर्य ॥ चन्दनैर्य
 उरुवावितकयूखीर्य ॥ धैर्य ॥ दीर्घ
 शत्रुमन्त्रादि ॥ ॥ सांगिक ॥

ॐ धीवर्धनिकि ॥ यूखिक ॥ ॐ
 यस्मत्तवर्क ॥ दक्षिण ॥ स्वस्तिवा
 चन ॥ यूल्लूकति ॥ धनाउरुवि
 सङ्गन ॥ दवयनिष्ठाइकाइलु
 साविप्रङ्गनयारा ॥ उरुजागल्ल
 शैलसा मासादुनिष्ठितिराव
 वसूल्लूकतिनधूनकधनैली
 विसङ्गनयारा ॥ उविस्व ॥ ३
 निष्ठा ॥ धनादवस्वमात्रका ६
 साकिस्वुनियारा ॥ वृणीनिदवयः
 निष्ठाविमिषयूल्लूक ४॥ ॥

अथ यन्त्रसंस्कारविधि ॥
 नासिच ३ ॥ याल्पयाम ॥ न्यास ॥ धन
 स्वस्तिवाचनयारा ॥ संकल्पेय ॥ ॐ
 अदा ॥ वाक ॥ यजमानस्य अमूक
 ऋग्यजुः ४ श्री अमूकदवगा अमूकः
 दवगाया ४ यजुः अर्थ अमूकयर्मसंस्तु
 स्कारमर्ककनिष्ठा ॥ धन संकल्पे

सादावचनसादावकल (भाधन
साय ॥ द्यालमसाय अठं ठा माह
का न्याससाय ॥ धन धून काव ॥
हं । धमकुनय कृष्णाय न (भाध
नसाय ॥ ॐ । धमकुन लख सस्ता
नसाचक ॥ काव लन दूय ॥ दूय
धून काव सुवल्लया वागसु ॥ धमकुमन
सकुतसाव वून वी दहन सस्तान
साचक ॥ दूदूधगी हात्र कृष्ण सारव
ल धन यस्तु तस्तान साचकाव
॥ रुन ॥ कस्तुरिक चून शीख लूक
कूम (भात्राचन धन नाया कृष्ण काव
॥ त्रुष्टकल नदरा का वस्तान सा
चक ॥ त्रुष्टकल नदरा क मरुत सा
कृष्ण दध शल ॥ धन धून काव ॥
धूय धान ॥ धूय मूलमकुन ॥ धय
नुकायाव सुल्लयी ० नतसाव कृष्ण
सायान विसाव (भाधन साय ॥ मूल
मकुन ॥ १०८ ॥ धय मयगी न (भाध
न १० ॥ धय ॥ यनुता जाय विद्वद्म
ह विद्वत्साय धाम हितनाय नय
सादसा न ॥ धन धून काव देवता

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नवास्वामि ॥ ॐ ह्रीं मं ॐ ह्रीं
खरं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॥
स्वनिनाम ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
नीलमत्रस्वनि ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॥
प्रकताता ॥ ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
॥ गालकम ॥

ॐ कं कालिमहाकाली त्रिदि
लामात्र ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
हेतवर्तनमासु ॥ ॐ कं कालिजा ॥
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं

१ श्री यत्र दत्तनाथे नमः ॥
अथ धवनचक्राद्याविधिः ॥
चतुर्मुखं तव ॥ वेङ्गसंनतं ॥
अष्टसंनतं ॥ तिथिः ॥
मृदुमि । चतुर्दशी । वृद्ध
मासि । गुरादशी ॥ अथ
उक्तमहिदिनः ॥
हृत्पूजकृत्तागिसुधवन
वातादातधवनमृधिवारा
नशाय ॥ ॥ नासिच ३ ॥
याधमयारामल ॥ अथ
कृष्णहामललेखकादा
ववासादाकल्य ॥ अथ
स्वकर्तृदमना
नायनकृष्णरुतामिवा
सकर्मरुक्कलिय ॥ ॥
स्वस्थिवारं प ॥ ॥ अथ
कल्याणादातधसिलाकला
लेख ॥ ॥ निवायमावस
रुनग्रसंनिहितरुव
॥ निवाकायाममृद्धि
नतवासिनिवाकृत्ता ॥
॥ ॥ अथलेखाव ॥ तदिधि

निसिद्धि नन ॥ कामदर्व ॥
असाक्ष ३ रावनयूजाय
य ॥ यै वा ये वा लनराय ॥
अद्यादियाव वलिदयका
वयाय धूनको वरु लिहा
उय ४ ॥ अत धवेन अवि
वाप्त ४ ॥ ॥ दवस्व अवि
वासनयूजा धूनको वडा
न ॥ अत ॥ ॥ २ सुव दूध
वनित्य कर्म धूनको ॥ अम
धवेनया सनिय सवदाव
का रु ल सदिता न धवेन ८
यमनूथ ॥ सानम ४ अका
अरुत ॥ चतुस्रमनवूल ॥
मनूथ ॥ नूनम ४ ददयाय
नम ॥ धवेनूथ ला सतय ॥
धना कर्मोच्च सनेवा का कर्म
साय च्छुटा ले धूनको लि
धना धवेन च्छुटा यना स ४
के ल्ययाय कुण दोमडा
कात ॥ अय ५ स्व सि वा च
॥ रात्र तवय ॥ अम का रु
वृत्त सम्यत्सत्रयूजा सा रु

ल्यकामादमना लाह न.
 मरुं कलिष्ठा ॥ वृत्तिस्तस्य
 ॥ कल्लेन ग ग्वल ले म
 दतल्लेन ग्वल लाह काय
 ल्याय ॥ आसन अस्त्रः
 यद्वाचाय ॥ तच्छालाया
 व ॥ कल्लेन लाह काय न ॥ वेद
 थ ॥ ॐ आतिष्ठ कल्लेन
 त्यादि ॥ निमल्लेन लल्ले
 थं न वेद थ ॥ ॐ वनल्ले
 स्मरुं त्यादि ॥ थना कल्ले
 ल्याय विधि ॥ थना लाह काय ॥
 थना कल्लेन लाह काय न ॥
 लल्लेन ॥ सिन्दूरल ॥ नवे
 ला निमल्लेन लल्लेन ॥ थन
 लि ॥ ॐ थमकुल्लेन ग्वला
 गल्लेन ॥ लाव ॥ नवकाय
 गल्लेन ॥ ॐ थना कल्लेन
 यल्लेन ॥ ॐ मल्लेन

॥ हनम ॥ य ॐ ॐ ॐ ॐ
 सं २ ॥ आ ॐ ॐ ॐ ॐ
 लल्लेन ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ददि ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 व



मै २ ॥ नैमत्यस ॥ लै २ ॥ व
ज्जिमस ॥ वं २ ॥ वायव्यस
॥ त्रै २ ॥ वृ ॥ नम ॥ ऊं नम
॥ थ त ज्ञेदिगयज्ञा ॥
थ ज्ञेद्यात्र रे त्री विद्याया
त्र विज्ञक ॥ ॐ ॐ ॐ
॥ ॐ नम ॥ ॐ ॐ ॐ
रुत ॥ थ त स त्र द ॥ त्रि ॐ
त्र मद्रा के न ॥ थ न ली ॥
थ म त्र न ह म न ली दे व न
दा स के ३ ॥ नै नम ॥ क व चा
स द ॥ थ न ली थ व उ व स
॥ स व ता रु द म ल ल ॥ ॐ ६
ॐ क रु द म (ध्रुव) ॥ त्रि ॐ
अ वा या व ॥ काम द व ध्यान
या य ॥ ॥ काम म त्र ल व लू
त त्र ल त्र क वा सा रु वा य क
। काम द रु आ त ति वि ति य
क स व स न व ध्रुवा ल ध न
दु त ॥ ॥ आ वा रु ना दि ॥ थ
म नु न या डा दि च न्य ना दि
॥ नै द्री नै द्री नै द्री नै द्री कामा य

नमः ॥ धनं लीन विष्णुजा ॥
कौंकौंकौंकौं त्रय नमः ॥ धनं कुंज ॥
(नमः वल्मीक मतिरु विर्गात्रस्त
त्रति ॥ धनं धनं नमः दाव ॥
शुवाहनादिचन्द्रनादियाया
दि ॥ धनं लीन विष्णुजा ॥
कौंकौंकौंकौं त्रय नमः ॥ धनं
न ॥ (नमः वल्मीक वामदक्षिण
रुस्तार्या ॥ धनं धनं कर्मना
नाकर्मकदम्बनमध
गंधन ॥ धनं वल्मीक नमः
य ॥ ॐ वसन्ताय नमः ॥ श्रु
वोनादियायादिचन्द्रनादि
धनापूर्वनिर्णयश्रुतिदिग
जा ॥ ॐ कामाय नमः ॥ ॐ
स्मृतीराय ॥ ॐ श्रुती
य ॥ ॐ मन्मथाय ॥ ॐ
सनाय ॥ ॐ सुनाय ॥
ॐ वल्मीक नमः ॥ ॐ
यस्यवालाय नमः ॥ ॐ
श्रुतिविष्णुजा ॥ धनाय
तिनरुकाजययाय ॥ ॥

अगत्सु त्रयाय विद्महे का
मद वाय धामहि तन्नो रं
नह ४ वृत्तादया गे ४॥ ॥

स्तोत्राय ॥ ॐ नमो
सुयुक्ता वा लभ्यते गदा ६
नेन्दकात्रि (६) मन्मथा ६
सङ्ग नृपत्र निष्ठितिया
सच ४॥ ॥ नमस्कात्रसाय

॥ धर्मलीदमनेलाहा

तिनकासाय धर्मलया

ॐ भूमिना सिद्धवणि

नर ४ कालमया निवाक

हृद्युयथा लार्हं पूर्णपू

र्वदाहया ४॥ यत्र भव्य

तीर्थाच्छिनाय साय ॥

धना भवनं भवति ० न ॥

अनम ४ कवेचो गद ॥ ॥ ॥

भवेन नय नृभ ४ वृत्ता

साय भूतकाली ॥ ॥ ॥

काली ॥ वेली भवमर्न विर ॥

धनं लीजय १०८ ॥ शुभं सु
ल ॥ धनाय च सकल
मून काव। सकल तां भवे
न जान काव भवन का
क ॥ सिला कथ ॥ ॥ ॐ
मस्तु च कुच कु नि सर्व यथा
सुख दिशि ॥ सर्वाने यून
समद वी का मान को भव
त्रवती ३ सा आली काय ॥
धना भ्रात साय ॥ ॥

ॐ ति द मुना लाह न वि
वि सं पूर्व ४ ॥ शुभं सु
वेदा शुभ ४ ॥

ॐ य स वा स न व द वि वि ॥ आ स न
ॐ न के २ दू दू सा हा ॥ ना ना ध न
म द न न ने ॥ ॐ स द वि द्या व न र
या दू दू सा हा ॥ य व वि ग र म दू
सा हा ॥ आ स न दू रा क न न ॥ ॐ
द व द न र व दू दू सा हा ॥

[illegible]

ॐ का मा लि मूर्ख य २ ॥ ॐ भि यो २ ॥ ॐ सं ए नो २ ॥ ॐ मा द नो न म ॥ ॐ ल कै २ ॥ ॐ ऊ या
च २ ॥ ॐ आ क र्षि नो २ ॥ ॐ स्मि तां ठ म ड ॥ ॐ न व स दि गा यो २ ॥ ॥ आ वा रु ना
दि ॥ च द ना क न यू षी न म ॥ ॥ त मा मू ल ॥ ॐ स र्व वा यि ना स क्ता नो २ ॥ ॐ ळ
मा रु दि नो २ ॥ ॐ व क्श नो २ ॥ ॐ सु र यो २ ॥ ॐ स्म सु र यो २ ॥ ॐ उ ड्ड य
यो २ ॥ ॥ त मा स्ता न ॥ ॐ सु र्व गार्थ म य द वा ठं ठ म प्रि य थ म मि नी ॥ त स्य द वा स
मा दा य स्ता न व प्र मि ष तां ॥ ॥ क स्मि द न ॥ व स ॥ का यो स य यं प्रि षु धा न
नु नि मि तं ष तां द वि क म ल का म ल य द सं यो ॥ ॥ व न्य न ॥ दी यां क य स म्
स्य नं द वा तां द वां का गी वा षा नं सु र्व व को षं च न्य नी प्रु ति ष तां ॥ ॥ सु न

[illegible]

ल॥ नीलाद्यालसरीदिव्यं यदितुं भिवं वक्षरे । सुधादवीमहं भनिहृद्वता
मृत्युलंगव॥ ॥ दसन॥ कंदयारुससंज्ञातं सुवदवप्रियं कन॥ हृद्वतात
महाजविमदनगववक्षरे॥ ॥ श्रुत॥ तमत्रयुगसंयुक्तं दब्धविचम
आयिच॥ नृनिष्ठमहायक्तुहृलंछाप्तातिमानव॥ ॥ दीय॥ मारुह
मद्रुलाखलुचलुविंवाजितं कसा॥ निधनदविदीयायं निर्मितं गवहृकि
ग॥ ॥ निवद्य॥ नियाशतां हृद्वतां दविरुकिं मज्जलां कुरु॥ हृद्वतां म
वनीददिद्यत्रयत्रां दीपि॥ ॥ साध॥ नवद्युतित्रसाद्यनैरुलेन
चसुसाहिरं॥ यक्ता न न स मायुक्ता हृद्वता न यत्र मध्यत्री॥ ॥ अर्थवि

या॥ अथादि॥ अथाय द व द धा नि वि वि दि ह ॥ सुक्तानं व इ न
श्रुगान् श्रुवा यय नि ह इ कानां ॥ ॥ मधुल दय क क वा दा वा वा य ॥ ॥
जाय ॥ ६ मन्त्रानां ॥ सुत ॥ श्री ह्य क्तो न स ॥ तमा सु न ड मा द वा सु खानां
या व हा ति (धा ति) ला क्त ज म नी द वा ह्य क्त नी य न म ह्य गी ॥ सिंहा स न स
मा न टा ह्य म ह ट क आ नि धी ॥ उ ह्य ला ह्य रु स्मा य वे दि ता सू त सू न्य गी ॥ ३
शु क्त व र्णा म हा दा कि ॥ ४ ॥ म्य न य गा रु सा न कू उ य् व्या हा वे दि ता
शु व नं ह्य गी ॥ ५ ॥ रु स व र्ण वि चि तां ति नि गा क स ला न ता य आ स न कि र्ण
ले क्ता र्वा दि ता ति नि क ह्य गी ॥ व रु रु जा म दा द वा ज ता र व ह्य न्द्र म न्दि ता

दक्षि। धवलदायादिददितासिद्धिनाथ्यगी॥ सर्वोत्पलकात्रहखाहीसर्वल
केवसेयूता॥ सर्वसिद्धिप्रदायवीवन्दितासर्वमहाला॥ त्रुदप्रियागसाति
र्यत्रुडाङ्गस्किनिहृतवप्रुलयास्किनिमूलज्ञावन्दितायास्त्रिकथ्यगी॥ ऊ
बाङ्ग॥ स्वायदागीचलज्जासंयददायिन। य॥ य॥ तसुतिमानन्दायुतयो
गादित्रकले॥ ॥ स्तुतर्हान्धदि॥ वाक्कनयूजा॥ दक्राना॥ अरिसुयदादुनादि
॥ आधिवाद॥ ॥ सूर्यसाकिथमय॥ अस्मत्तस्यकामोदगसंघर्षद्विषोसाक्षिध
शासूर्योयसूर्यनमः॥ वृष्यनमः॥ निम्मोस्यखसिस्ववाय॥ ॥ ॐ॥ तिस्रस्काति
वुतविषिसमाय॥ ॥ स्वस्कातिनातिप्रसु॥ ॥ ॐ॥ नमः॥ सूर्य॥ सूर्या

दि श्यात् ॥ श्रु घया उ य ऊ ॥ श्रा त्म य ऊ ॥ ॥ त ग ग द्वा सु य ऊ ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 न म ॥ न न्दि न न म ॥ म द्वा क द्वा य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 क य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 न य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 वा रु नी ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द
 दि य लु क न ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द य ग य न म ॥ ॥ तुं ग द

जादिमवभूकनदनागसमनिर्ष। नकास्ययदनागमदि नकास्मिहिरुषिगमः
कयदकनास्मिर्दं कालावाकदिगकनं सनर्त्तसासर्त्तसां गं सधर्किससमलुलान
वं धावागुम्रुननकप्रयाग्लिगयं ॥ धा नयर्थनमः ॥ ॐ जां जां सु४ सु४ यो यनम
॥ ॐ दयादि ॥ ॐ उयायेनम ॥ ॐ विऊयायेनम ॥ ॐ अडिगायेनम ॥ ॐ यदना
कितायेनम ॥ ॐ ऊम्बेनम ॥ ॐ ऊम्बेनम ॥ ॐ भादयेनम ॥ ॐ अकषयेनम ॥ ॐ आ
वाहनादि ॥ ॐ सुर्थोयनम ॥ ॐ स्वसं ह्वायनम ॥ ॐ यूषाविषयनम ॥ ॐ विखरु
मानि लनम ॥ ॐ निरुत्तस नम ॥ ॐ सिनायनम ॥ ॐ तयनायनम ॥ ॐ सविगुनम ॥ ॐ नव
नम ॥ ॐ लोकधर्मादि नम ॥ ॐ जग लेखायनम ॥ ॐ आदि एयनम ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ ऊं ऊं
मदायेनम ॥ ॐ मदायेनम ॥ ॐ सिद्धिदायेनम ॥ ॐ शगदायेनम ॥ ॐ गङ्गादायेनम ॥ ॐ किङ्काय
नम ॥ ॐ मकुदायेनम ॥ ॐ धर्मदायेनम ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ आदि एयनम ॥ ॐ ष्ण
यनम ॥ ॐ अग्निपुत्रपिठवतायेनम ॥ ॐ सामायउमाययय एषिठवतायनम ॥ ॐ अग्न

नायस्कदायः क्षितिपुण्यदिवताः नमः॥ ॐ वृक्षाय नानाय नाय विष्णुय विष्णुय विष्णुय
 २॥ ॐ वृक्षस्य गय वृक्षे भवेन्नृपुण्यदिवताय २॥ ॐ शुक्राय भूक्राय भू
 कृवगाय २॥ ॐ भूनेभ्य नाराययुक्तायुण्यदिवताय नमः॥ ॐ नाहु वृकालाय स
 र्ययुण्यदिवताय २॥ ॐ कर्तव विग्रह उकाय वृक्षायुण्यदिवताय २॥ ॐ उन्नने स
 क मसि यो दि न रक्ष ग कृ य ए सि रु व ता य न मः॥ ॥ आ वा रु ना दि॥ ॥ ॐ ॐ न्द्राय
 नमः॥ स्रुना धिय तय नमः॥ वज्र रुद्राय २॥ वे ना व गा से नाय नमः॥ ॐ अ न्न य नमः॥ तं जा
 धिय तय नमः॥ भू कि रुद्राय नमः॥ ॐ य माय नमः॥ यु ता धिय तय नमः॥ द छ रुद्राय नमः॥
 मरुि या से नाय नमः॥ ॐ ने म णाय नमः॥ नाक्ष सा धिय तय नमः॥ ख म रुद्राय नमः॥ यु ता धि
 ता धिय तय नमः॥ ॐ व र्क्षाय नमः॥ कु ला धिय तय नमः॥ या स रुद्राय नमः॥ म क ना स नायः
 नमः॥ ॐ वायूय नमः॥ भू रुद्राय नमः॥ रु वि क्षय नमः॥ ॐ कृ व नाय नमः॥ ध ना धिय तय
 नमः॥ न कु ल रुद्राय नमः॥ रु या से नाय नमः॥ ॐ ॐ न्द्राय नमः॥ ॐ ॐ न्द्राय नमः॥

[illegible]

स र दा वि व स न र स ता मा
 या सि ल कि व द्म सा म र
 स न यि वि ल हि सा हा ॥ ॥

स र दा वि व स न र स ता मा
 या सि ल कि व द्म सा म र
 स न यि वि ल हि सा हा ॥ ॥

००

ताम ॥

ॐ वा

॥

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ मि. श्री क लिय निवो न था

ॐ नमः श्रीमहाप्रियव्रतसुन्दर्ये न
 मः ॥ दय्युवाच ॥ दददवमहादव
 रुकानां श्रीवीवर्द्धनं । सुचिर्गति
 यन्नादद्याकवर्चकथयस्व म ॥ १ ॥ ॐ
 नमोवाच ॥ ॐ लूदवीप्रवर्द्धमिक्व
 चंदवदत्तं । त्रयकां धीयत्रं ॐ
 श्रीसाधका रित्यसिद्धिदं ॥ २ ॥ क
 वचस्यमभिर्दवीदद्विजामूर्तित्रय
 यः ॥ कुन्दयकि ॥ समद्विष्टं दूवीनि
 यत्रसुन्दरी ॥ ३ ॥ धर्मार्थकामाद्गुण
 विनित्यागसुसाधनं । वाञ्छुवकामं
 ॐ नमोकिर्वीर्जं महेश्वरी ॥ ४ ॥ निर्य
 मीवोऽरुववात्रु कामराजस्तथाहृदि ।
 ॐ नमोकिर्वीर्जं सदावात्रु नारोऽनुद्वय
 दशा ॥ ५ ॥ ॐ श्रीसोऽवदनवात्रुवा
 लामसिर्वसिद्धयः । दूरेहसकत्री ॐ ॥
 वात्रुर्देवकीर्णदं ॐ ॥ ६ ॥ सुन्दरी
 नारिदं ॐ नमोकिर्वीर्जं कामकलाभदा
 रुना ॐ नमोऽवदावात्रुमहाप्रियव्रतसुन्द
 री ॥ ७ ॥ ललानमः ॐ नमोवात्रु
 गमाकलदं ॐ नमोऽवदावात्रु
 यथात्रु उदतरु गस्यो ॐ ॥ ८ ॥

रणमालानारिद (८१) लिङ्गमन्त्रा
 रवा। पुङ्गुं द्याकुमरा देवी। गङ्गा
 उज्ज्वली। निर्वर्तिनम्। त्रिनिवा
 द्यादया। उगदमिका। नागाय
 ती सर्वभावे सर्वकार्ये शुरुं कृती॥
 ॥१०॥ पुङ्गुं द्याकुमराय नमः
 दक्षिणे वेष्टनीतथा। यष्टिमेवा
 पुवताही उरुतुमरु श्वती॥ ११॥
 आभ्यर्थाया पुकोमाती महासङ्गा
 श्वनेमत। वायुर्वा वातुं चामुक्तान्
 द्याही वातुं ॥ १२॥ उलवातु
 महामाया द्यविषी सर्वमंगला। आ
 का (८१) वातुवतदा सर्वगुरुव (८१) श्व
 ती॥ १३॥ ०० दनुं केवर्चदद्याद
 वानामविदुस्त्रयी। य (८०) त्यातसमं
 कोय शुचिः प्रयतमानस॥ १४॥
 गङ्गायाभिरुर्गं तस्य वर्णं गच्छ क
 चित्कुरु। नमातीरुर्गं तस्य वातु
 कायैरुर्गं तथा॥ १५॥ नदात्रिष्ट
 यसगतिनिष्ठमूल्यरुषनचाग
 छुष्टिवयुत्रन्दवीसुखं सुखं वदाम्य
 ह॥ १६॥ ०० दं केवर्चं मास्तुला श्री

विद्यायायथलिय। समाद्यातिरु
नैगस्ययायूयाभगुद्यातेन॥१॥
वृत्तिश्रासिर्देसामलउमामहश्च
नसम्तादश्रामत्तियूगसुन्दरीश्री
विद्यायाकवचसंयुक्तं॥४॥ ॥
ॐ नमः४ व्यल्लिकारोनमः॥
सर्वस्तिगारुगवनिममत्रूदचल्लि
वीगाम्त्राविनयमात्रयीनदहा
।वृक्षादिशासूधधराचक्षितहृष्ट
साकल्यानमाददगुदेत्यविनासका
नी॥१॥ दवीचयादहनका
निवासिनीसां॥१॥ क्वादिशासूधध
रावत्रकवर्त्तमाहृष्यत्रीनिक
तामूनिरि४ समस्तदेवातिनाम
नकर्त्ति॥१॥ रुद्रवच॥१॥
ह्यानमात्रननीयनमचकारच
ल्लिद्धकाविनयनीयमदल्लुका
द्या।सर्वसूक्ष्मवत्रिरुवितचा
त्रुहस्तादेत्यायनाभनकत्रीयमदि
गुप्तसक्त॥३॥ नीलात्रवर्त्तसदमा
नेवशीवनाद्यनेमत्यकालवत्रिसं
क्षितयात्रुर्वी।खण्डिभस्तुव

नहानि वसक रुसां श्री च लु नाय
कवती वलमा मिनिर्ह्य ॥ ४ ॥ च
लुयुवात्रि रुतलाम्गना डारुका
भरवन्दूकलु धवता कमलायना
श्री। वा। भा। वू। भा। दि। वे। त्रि। लाम्गना
दवर्विद्या यायात्सदावतूजदिगु
दत्र (भा) रितासा ॥ ५ ॥ वायुवदि
कमलसंस्तिगदिद्यतूया रुसुध
नाधउसुमूङ्गत्रचकुकाया। धूमा
त्रवर्तुदभगीममचलिकासासुवो
निहंउदत्रिगानिदारुवानी ॥ ६ ॥
यदे। भा। दि। ग्ग। त्रि। सु। रु। वि। न। य
नी। स्तां। वी। ग। म्भ। त्रा। क। न। चं। य। क। व। द्
मे। दे। हां। रु। स्ता। न। दा। वि। वि। ध। य। ध।
(भा) रितासां दवी नमामिउ न
नोमत्रचलु त्रूया ॥ ७ ॥ वू। भा
न। दि। कू। य। त्रि। वि। रु। वि। त। का। नि। द
हां। या। पे। द्म। का। नि। उ। न। नी। म। ति
चलिका नां। सु। त्रौ। सि। च। वु। भ। त्र
भाकिग दा दि रुसां रुसु नमा
मिनित्रसा गुवन नवत्राये ॥ ८ ॥
शा। श्री। उ। रु। ग। व। ती। व। त्र। मा। स। य। व।

सृष्टि स्थिति प्रलय विश्व मया त्म
दत्ता ॥ स सा त्र मा हि त क त्री व त्रु ना
सू त्र वी च ली द द ा त्रु म मू वा प्रि त
ता त्र ल क्ष्मी ॥ ८ ॥ ० ० ति ० ० च लि
का स्र व ता त्र स वूर्ण ॥ ९ ॥

एका लीया केन ॥ वृद्धा दिवत्ता
 स ॥ ५३५ ग आस ॥ ०००० दि १०
 आस हें व आस, निव आस व
 लयाया अग्नि आस न कलव
 आस १०, रवा न १०२५, पिध कि
 सि, रवा मा क, ला न, र न
 ग न ७, म न र व का न र व, अ
 ल ति ४५ न, अ क ५५ वा, म न
 ल वा स, वा १, र व र वा ग, वा
 क ४॥ ०००० ति का न आयाम कि ॥ ४५

ॐ क्रीं श्रीं कामरूपादिचतुर्धा लेश्वर
 ॐ क्रीं श्रीं पंचदशनामनाथेश ॥ अ
 वल्लभकृष्णसंकाशं पंचवक्त्रं
 प्रतीकं ॥ पाशकृष्णवर्णालीनम
 सुमालागलशृङ्गां ॥ विद्यामकुप
 दीपदीपवन्दित्तिष्ठतु नवी ॥ नील

नवमचन्द्रकी नारिकानवना
यिकी ॥ श्री विष्णु नववी ॥ हा

गच्छ २ ॥ द्वा. तिष्ठ २ सा हा ॥

१ कया लस ॥ जे जो की विष्णु गरुगव

तीसा हा ॥ न गलस ॥ की १० ॥ कं ० ॥

ॐ १० ॥ न रुसा ॥ ॐ नृ ५० ॥ नृ ५० मूल १०

ॐ नृ ५० ॥ ॐ ॥ लिं १० ॥ नृ १० ॥ मू हा

५५ ॥ की १० ॥ जि द्वा ॥ की १० ॥ ॐ ति

५५ का उप ४ ॥ ॥

ॐ की की की की न की की की की की की

की की ॥ मा हा मनु ॥